B.A. (Hons) Part I
Philosophy, Paper I
Topic जैन दर्शन का अनेकान्तवाद सिद्धान्त

Dr. Sachidanand Prasad.
Department of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama

जैन दर्शन का अनेकान्तवाद सिद्धान्त उसके तत्वशास्त्र से जुड़ा हुआ है। जैन दर्शन का तत्वशास्त्र वास्तवादी सापेक्षता वादी अनेकवाद है। जैन दर्शन के अनुसार इस संसार में अनेक वस्तुएं है और प्रत्येक वस्तु के अनंत धर्म है। जैन दर्शन के अनुसार यह संसार जीव और भौतिक जड़त्व से परिपूर्ण है। जैन दर्शन में जीव आत्मा का पर्याय है। जीव चेतन द्रव्य है। चेतना जीव का स्वरूप लक्षण है। जैन दर्शन में जीव को ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता इत्यादि माना गया है। जीव की विशेषता यह है कि जीव अमूर्त होने के बावजूद आकार ग्रहण कर लेता है इसलिए जीव अनेक है।

जैन दर्शन के अनुसार जीव के अतिरिक्त संसार जड़त्व है जिसे पुद्गल कहा जाता है।

अब प्रश्न उठता है कि पुद्गल क्या है। जो द्रव्य पूरण और गलन के द्वारा विभिन्न प्रकार से परिवर्तित होता है, वह पुद्गल है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि पुद्गल वे हैं जो पूर्ण होते रहें और गलते रहें। पुद्गल के दो प्रमुख भेद हैं - अणु और स्कन्ध। पुद्गल का वह अंतिम अंश जो विभाजन से परे है अणु है। स्कन्ध अनेक अणुओं अथवा परमाणुओं की रचना होती है। अणुओं के समुदाय को स्कन्ध कहा गया है। पुद्गल के चार गुण होते हैं - स्पर्श, रस, गन्ध और रूप। ये चारों गुण अणु अथवा परमाणु तथा स्कन्ध में भी विद्यमान रहते हैं।

जैन दर्शन के अनुसार सारा संसार चेतन जीव और अचेतन पुद्गल से भरा पड़ा है जो नित्य, स्वतंत्र तथा अनेक है। इसप्रकार हमलोग यह देखते हैं कि जैन दर्शन बहुतत्ववादी, यर्थाथवाद का समर्थक है। जैन दर्शन का कहना है कि प्रत्येक वस्तु के दो पक्ष होते हैं - नित्यता और अनित्यता। जैन दर्शन के अनुसार वस्तुओं में अनन्त गुण होते हैं जिसमें कुछ

गुण स्थाई और कुछ गुण अस्थाई होते हैं। स्थाई गुण वे हैं जो वस्तुओं में निरन्तर विद्यमान रहते हैं और अनित्य गुण वे हैं जो परिवर्तित होते रहते हैं। चूंकि नित्य गुण वस्तु के स्वरूप को निर्धारित करते हैं इसलिए उन्हें आवश्यक गुण भी कहा जाता है इसके विपरीत अनावश्यक गुण द्रव्य में सर्वदा विद्यमान नहीं रहते हैं। वे परिवर्तनशील गुण हैं। उदाहरण के लिए चैतन्य आत्मा का स्वरूप गुण है जबकि सुख-दुःख, इच्छा इत्यादि आत्मा के आगन्तुक गुण हैं। इन्हीं गुणों के फलस्वरूप द्रव्य में परिवर्तन होता है। उपरोक्त गुणों का कुछ न कुछ आधार होता है जिसे द्रव्य कहते हैं। जैन दर्शन आवश्यक गुण को जो वस्तु के स्वरूप को निर्धारित करता है गुण कहते हैं तथा अनावश्यक गुण को पर्याय कहते हैं। द्रव्य का गुण अपरिवर्तनशील होते हैं जबकि पर्याय परिवर्तनशील होते हैं। द्रव्य का यह प्रमाणित होता है कि एक और अनेक, नित्य और अनित्य, भिन्न और अनेक धर्मों का अनेकान्तवाद के आधार पर समन्वय होता है।